वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में युग चेतना

[1]वंदना शुक्ला
शोधार्थी- हिंदी विभाग,
[2] डॉ. आशीष कुमार तिवारी
सह. प्राध्यापक हिंदी विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

शोध सार

तत्कालीन युग की विचारधाराऐं जो युगीन जीवन में चेतना का संचार करती है वे साहित्य में चेतना के नाम से जानी जाती है, प्रत्येक रचनाकार की रचना की रचना का मूलाधार युगीन जीवन और उससे सम्बन्धित घटती रहती है की श्रेष्ठ साहित्यकार वही सिद्ध होता है जो सामाजिक चेतना को समझता है यह चेतना आंतरिक एवं बाह्य जगत से उभर कर परिलक्षित होती है। साहित्यकार समकालीन युग की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक गतिविधियों को समझता है। इन गतिविधियों का प्रभाव उनके अंत:करण को जागृत करता है। निराला जी के समय समाज में असंतोष, अराजकता,व्याप्त थी उनको अनेक विषमताओं से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ा। जहां एक ओर धार्मिक रूढ़ी, रीति- रिवाज अंधविश्वास जैसे असामाजिक तत्व अपनी चरम सीमा पर थे वहीं दूसरी ओर आर्थिक तंगी भी हावी थी। देश में ब्रिटिश सत्ता हटकर राजनेताओं की हाथ आ गई थी। जनमानस आर्थिक रूप से परेशान था आम आदमी पूंजी-पतियों एवं सामाजिक समसामयिक गतिविधियों से कुंठित था। इन परिस्थितियों में जूझते हुए साहित्यकारों के अंदर भी आक्रोश उभरा और क्रांति आंदोलन के रूप में अपनी रचनाओं के माध्यम से उसकी अभिव्यक्ति की। साहित्यकार के ऊपर भी व्याप्त असामाजिकता, वर्ग - भेद जैसे तत्वों का भरपूर प्रभाव पड़ा। उन्होंने साहित्य के माध्यम से युग चेतना का प्रतिनिधित्व किया। धार्मिक आडंबर पूंजीपतियों का विरोध आदि समस्याओ को सुलझाने में उत्तरोत्तर उन्नति की।

बीज-शब्द

युग चेतना, सामाजिक, असमानताएं, गतिविधियां, जनमानस, धार्मिक आडंबर।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

शोध विस्तार

हिंदी साहित्य के इतिहास को देखें तो छायावाद को दूसरे स्वर्ण काल के नाम से जाना जाता है। छायावाद में प्रमुख रूप से चार स्तंभ कवि माने जाते हैं - जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा इन्हीं में से निराला जी का नाम साहित्य जगत में प्रमुख ओजस्वी क्रांतिकारी कवि के रूप में उभरकर सामने आये हैं। इन्होंने अपनी कविता में यथार्थ को चरितार्थ किया है इनके साहित्य से स्वच्छंदता, यथार्थवाद, रहस्यवाद, परंपरावादी आदि पर अपने अनेक प्रकार से विचार व्यक्त किए हैं। निराला के छायावादी काव्य में प्रेम गीत है। इन्होंने साहित्य के विभिन्न रूपों में उत्कृष्ट रचनाएं समाज को प्रदान की है। नाटक, आलोचना, कहानी, उपन्यास आदि के विविध क्षेत्रो में अपनी कलम से लेखन कार्य किया है उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज की रूढ़ियों भेदभाव को उजागर किया। वे ऐसे कवि हैं जो व्यक्ति को सत्य के आधार पर सामंती रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह करते हैं और समाज में व्याप्त सामंती वर्चस्व को व्यंग्यात्मक रूप से निखारते हैं इनके विद्रोहत्मक और व्यक्ति मूलक जीवन दृष्टि काव्य में सटीक देखने को मिलती है। उन्होंने समकालीन समाज की समस्याओं, भेद - भाव शासित वर्ग, पूंजी पति वर्ग का दुर्व्यवहार का आकलन किया है वे समय परिस्थिति की पराकाष्ठा को सुधारना चाहते थे। तभी उन्होंने अपने साहित्यिक रचनाओं में समाज का सच्चा एवं निष्पक्ष चित्रण प्रस्तुत किया है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का पूंजीवाद विरोध - निराला सामाजिक विसंगतियों के घोर विरोधी थी वे इन विसंगतियों को दूर करने का निरंतर प्रयास करते रहे। कई कविताओं के माध्यम से पूंजीपतियों को करारा जवाब दिया है वह जानते थे कि लोगों की मजबूरी का फायदा यह लोग भरपूर उठाते हैं और समाज में लाचारी बेबसी के लिए पूंजीपति वर्ग ही कहीं ना कहीं जिम्मेदार हैं। उनकी रचना कुकरमुत्ता में इसका वर्णन मिलता है उन ने अपनी इस कविता में पूंजी पत्तियों को फटकार लगाते हुए लिखा है-

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू रंगो आब
खून चूसा खाद का तूने असिस्ट
डाल पर इतराता है केपीट लिस्ट
कितनों को तूने बनाया है गुलाम
माली कर रखा सहारा जडा धाम"।[1]

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

उपरोक्त इन पक्तियों में पूंजीपति के प्रति आक्रोश स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने यथार्थ को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया है। वे सामाजिक शासको के चरित्र का खुलासा करते थे। सामाजिक चेतना से संपन्न व्यक्तित्व के धनी हैं। समकालीन परिस्थितियों में उन्होंने सामाजिक संघर्ष को यथार्थ रूप में देखा है, सहा है और समझा है। दिल्ली कविता में इतिहास पर दृष्टि डालते हुए वह भाररतीय जनमानस में आत्म गौरव, देश प्रेम एवं स्वाभिमान की भावना का संचार करते हैं।

"क्या यह वही देश है
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र
चिर कुमार भीष्म की पताका ब्रह्चर्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहाँ वायुमंडल में
उज्जवल अधीर और चिरनवीन"।।[2]

परिस्थितियों को वह देखते रहे और अपने साहित्य के माध्यम से करारा जवाब देते हुऐ आगे बढ़ते रहे। उनके अंदर समय परिस्थिति को झेलते हुए, कभी हार ना मानने की जिद समाई थी। उन्हें लेखन कार्य अत्यंत प्रिय था और अपनी कलम के माध्यम से नवजागरण का कार्य बड़ी निपुणता के साथ किया है। कुकुरमुत्ता में निम्न वर्ग पर किए गए अत्याचार, उनके साथ किये गये अमानवीय व्यवहार के ऊपर निराला ने घातक प्रहार किया है। निम्न वर्ग के रहन-सहन का चित्रण प्रस्तुत किया है। वे समाज को शोषण मुक्त देखना चाहते थे। वे न्याय, समानता, स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनके मन में लालसा थी कि समाज अन्याय अत्याचार से मुक्त हो। इस मुक्ति के लिए वह युवाओं को जागृत करने के लिए संकल्पित हैं जागों एक बार फिर कविता में वह पुर्नजागरण की अलख जागते हैं-

"शेरों की मांद में आया है आज स्यार,
जागो फिर एक बार।
तुम हो महान तुम सदा ही महान,
है नश्वर यह दीन भाव।
पदरज भर भी नहीं पूरा विश्वभार,
जागो फिर एक बार"।।[3]

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

निराला की काव्य शैली समाज को उत्प्रेरित करने का कार्य किया है। वे ओज क्रांति और औदात्य के कवि है। उन्होंने जनता को जगाने का कार्य किया है। वे परतंत्रता में स्वतंत्रता के प्रति जनता को जागरूक करना चाहते उनके काव्य में समाज के प्रति राष्ट्रीय चेतना का भाव कूट-कूट कर भरा था। भारत के वीरों का आह्वान करते रहते थे। वे अंग्रेजों को गीदड़ के समान समझ कर सफाई करना चाहते थे।

"दलित जन पर करो करुणा
दीनता पर उतर आए
प्रभु तुम्हारी शक्ति करुणा"।[4]

निराला की साहित्य में राष्ट्र की गूंज थी वे आत्म केंद्रित के साथ-साथ वस्तु केंद्रित भी थे वे समाज में व्याप्त अंतर डंडों और संघर्षों की अनुभव कर रही थी उन्होंने दलित चेतना और नारी चेतना का सूक्ष्म चित्रण अपने साहित्य में किया है। ''निराला की विचाराधारा मूलत: क्रांतिकारी है साहित्यिक, दार्शनिक, राजनीतिक सामाजिक तथा धार्मिक सभी क्षेत्रों में इनके विचार एक नवीन उन्मेष नर्क उत्तेजना लेकर आते हैं।''[5]

निराला जी न केवल साहित्यिक जीवन में ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी क्रांतिकारी रहे है। समाज में व्याप्त जातिवाद, अंधविश्वास एवं अन्य सामाजिक बुराइयों की कटु आलोचना करते हुए युग चेतना का उद्घोष किया। निराला जी को स्वयं उपेक्षाओं का सामना करना पड़ा पर उन्होंने कभी भी हार नहीं मानी उनके व्यक्तित्व के विषय में डॉ. रामविलास शर्मा ने सही ही लिखा है-

''यह कवि अपराजेय निराला
जिसको मिला गरल का प्याला
ढहा और तन टूट चुका है
पर जिसका माथा न झुका है''।[6]

अंतर विरोधों और संघर्षों का खुलकर आकलन साहित्य में किया जहां भी क्रांतिकारी भाव को उजागर करते हैं वहीं दूसरी ओर स्त्री की करुड़ अवस्था और दयनीय स्थिति को उजागर भी

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

किया है। स्त्री पुरुष भेद,नारी की गिरती हुई स्थिति को जोड़ा है। वे स्त्रियों को समझ में समान अधिकार दिलाना चाहती थी स्त्री साक्षरता को बढ़ाना चाहते थे स्त्री की श्रृंगार में परतंत्रता का प्रतीक उसके पायल बिछिया बिंदी आदि के साथ प्रेम त्याग और समर्पण भी मानों नारी अपने परिवार के पालन पोषण के लिए पुरूषों के समान भारी पत्थर उठाने का भी कार्य अपनी कर्तव्य निष्ठा के साथ करती है। निराला जी ने इस दृश्य का अनोखा चित्रण वह तोडती पत्थर कविता में किया है-

"वह तोड़ती पत्थर ।
कोई ना छायादार पेड़ वह जिसके तालिब बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, प्रिय - कर्म रत मन,
गुरु हथोड़ा करती बार-बार प्रहार
सामने तरु मलिक कटालिका प्रकार।"[7]

यह रचना निराला जी के संवेदनशील व्यक्ति को उजागर करती है। नारी की श्रमिक कार्य दशा का वर्णन किया है जेठ की तपती दोपहर में चमचमाती तेज धूप में कार्य करती महिला के प्रति सहानुभूति नहीं बल्कि स्वानभूति रखी वह बड़ी से बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित करते है कि किस प्रकार वह बार-बार प्रहार करती है और पूंजीपति वर्ग भोग विलासिता में बड़े-बड़े घरों में रह रहे हैं आसपास कोई छायादार वृक्ष भी नहीं हैं

"जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ आओ - आओ।
आज अमीरों की हवेली।
किसानो की होगी पाठशाला।
धोबी, पासी, चमार, तेली।
खोलेंगे अंधेरे का ताला।"[8]

निष्कर्ष- उपरोक्त विश्लेषण से हम निष्कर्षत: यह कह सकते हैं कि जनसाधारण की वास्तविक और गहरी अंतर चेतना को निराला ने अभिव्यक्त किया है। निराला जी निष्ठा से अभिभूत थे और जनमानस की अपेक्षा निराशा सहनशीलता अपमान आदि को बड़ी ही सरलता से पहचानते थे। भारतीयों के जनसाधारण घोर विपत्तियों से भरे जीवन को से भरे जीवन उन्होंने अपनी

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

काव्य रचनाओं में इस तथ्य को उन्होंने शोषक वर्ग के खिलाफ शोषित वर्ग में युग चेतना का भाव जागृत करके उसे संगठित कर शोषण मुक्त समाज को स्थापित करने की पूर्ण सफल कोशिश की गहनता से उजागर किया है। निराला के काव्य इतना व्यापक, विराट, यथार्थ तथा सौंदर्य से परिपूर्ण है। प्रत्येक कवि अपने समाज के वर्तमान अतीत और भविष्य में ऊर्ध्वगमन करता है। निराला जी ने भी परम्परागत काव्य प्रबन्धों की आधुनिक जीवन में पुनः व्याख्या की है। वह प्रगतिवादी चेतना के कवि होने के साथ जीवन के यथार्थ से भली भांति परिचित थे। वे समाज में व्याप्तदोषों को नष्ट करना चाहते थे। उनके व्यक्तित्व में एवं उनकी काव्य रचनाओं में जन जागरण समाहित था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. संजीव कुमार जैन / आधुनिक काव्य / कैलाश पुस्तक सदन भोपाल/ पृष्ठ क्रमांक 64
2. नंदकिशोर नवल/ निराला/रचनावली भाग-2 / राजकमल प्रकाशन हिंदी / पृष्ठ 99
3. डॉ अशोक कुमार तिवारी/ प्रतियोगिता साहित्य / साहित्य भवन / पृष्ठ क्रमांक 81
4. पूवर्वत।
5. डॉ. बच्चन सिंह/ क्रांतिकारी कवि निराला/ विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी/ पृष्ठ क्रं.165
6. नंदकिशोर नवल/ निराला रचनावली भाग-1/ राजकमल प्रकाशन दिल्ली / पृष्ठ सं. कवर पेज
7. डॉ अशोक कुमार तिवारी/ प्रतियोगिता साहित्य/ साहित्य भवन / पृष्ठ क्रमांक 82
8. डॉ संजीव कुमार जैन / आधुनिक काव्य /कैलाश पुस्तक सदन भोपाल / पृष्ठ क्रमांक 89